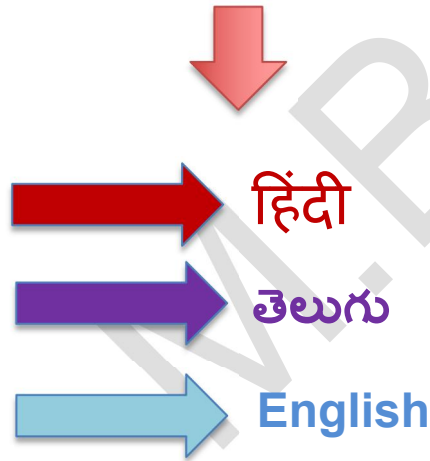


9th CLASS - HINDI - STUDY MATERIAL

LESSON-1 - दुःख का अधिकार

Highlights of the study material:

- Written in simple Hindi Language.
- Total number of question (5+6+5) =16
- Video Explanation for every Question in



M.V.V.N.BALARAMAMURTHY
S.A. (HINDI), ZPHS (Boys)
TANUKU, TANUKU MANDAL,
WEST GODAVARI DISTRICT

1. दुःख का अधिकार



शब्दार्थ :

पोशाक	– वस्त्र, पहनावा	सूतक	– परिवार में किसी बच्चे के जन्म होने या किसी के मरने पर कुछ निश्चित समय तक परिवार के लोगों को न छूना, छूत
अनुभूति	– एहसास	कछियारी	– खेतों में तरकारियाँ बोना
अड़चन	– विघ्न, रुकावट, बाधा	निर्वाह	– गुजारा
अघेड़	– आधी उम्र का, ढलती उम्र का	मेड़	– खेत के चारों ओर मिट्टी डालकर बनाया हुआ घेरा, दो खेतों के बीच की सीमा
व्यथा	– पीड़ा, दुःख	तरावट	– गीलापन, नसी, शीतलता, ठंडक
व्यवधान	– रुकावट, बाधा	ओझा	– झाड़-फूँक करने वाला
बेहया	– बेशर्म, निर्लज	छन्नी-ककना	– मामूली गहना, जेवर
नीयत	– इरादा, आशय	सहूलियत	– सुविधा
बरकत	– वृद्धि, लाभ, सौभाग्य		
खसम	– प्रतिज्ञा		
लुगाई	– पत्नी		
परचून की दुकान	– किराने की दुकान		

मौखिक

-1-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है ?

ज) किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें समाज में उसकी आर्थिक स्थिति और दर्जा का पता चलता है। इसके साथ उसके अधिकारों का ज्ञान होता है।

Explanation Video

<https://youtu.be/tmC8bAuigAQ>

2. खरबूजे बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं खरीद रहा था ?

ज) खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के बेटे की मृत्यु हो गयी। उसका बेटा पिछले दिन ही मर गया। सूतक वाली स्त्री के द्वारा बेचने वाले फल खरीदकर खाने से धर्मभ्रष्ट होने का डर वहाँ के लोगों को था।

Explanation Video

<https://youtu.be/iLuN7KZ8ST8>

3. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा ?

ज) खरबूजे बेचने वाली स्त्री फुटपाथ पर बैठी रो रही है। लेखक उस स्त्री को देखकर चिंतित हो गए। उसके दुःख को जानने का प्रयास कर रहे हैं।

Explanation Video

<https://youtu.be/tKKONx7xf2k>

4. उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था ?

ज) खरबूजा बेचनेवाली स्त्री का बेटा साँप डँस लेने के कारण मर गया। वह प्रातःकाल के समय खेत में खरबूजा तोड़ रहा था। उसी समय उसका पैर एक साँप पर पड़ गया। साँप ने डँस कर मार डाला।

Explanation Video

<https://youtu.be/WNNhlwNxeMc>

-2-

5. बुढ़िया को कोई भी क्यों उधार नहीं देता ?

ज) कमाने वाला बेटा साँप डँसने से मर गया। अतः उसे उधार देने पर वापस वह दे नहीं सकती है। इसलिए कोई भी उसे उधार नहीं दे रहे हैं।

Explanation Video

<https://youtu.be/UuimMBC3T28>

लिखिए:

1. मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है ?

ज) मनुष्य के जीवन में पोशाक का बड़ा महत्व है। पोशाक ही मनुष्य की सामाजिक और आर्थिक को दर्शाती है। पोशाक से ही मनुष्य में भेद दिखाई पड़ता है। समाज में मनुष्य इसी पोशाक के कारण आदर पा सकता है।

Explanation Video

<https://youtu.be/tmC8bAuigAQ>

2. पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है ?

ज) जब हम अच्छे पोशाक पहनते हैं, तब वह पोशाक हमें दीन एवं कम हैसियत रखने वालों के साथ बैठने नहीं देती। पोशाक से हम स्वयं अपने को बड़ा मानते हैं। सामने वालों को कम मान बैठते हैं। उनसे बात करने के लिए संकोच रखते हैं।

Explanation Video

<https://youtu.be/Vz6riGRUPPk>

-3-

3.लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया ?

ज) लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं पूछ पाया कि वह स्त्री फुटपाथ पर बैठ कर रो रही है। लेखक के अच्छे पोशाक उस स्त्री के पास बैठने से रोक ली है। उसकी व्यथा को जानने न दे रही है।

Explanation Video

<https://youtu.be/kfwwFtVXrnc>

4.भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था ?

ज) भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन पर हरी तरकारियाँ तथा खरबूजे उगाता था। वह हर दिन उन तरकारियों को और खरबूजों को सब्जी मंडी या फुटपाथ पर बैठकर बेचता था। इस प्रकार अपने परिवार का पोषण करता था।

Explanation Video

<https://youtu.be/CtMIOFZAM4o>

5.लड़के की मृत्यु के दूसरे दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी ?

ज) लड़के की मृत्यु के दूसरे दिन खरबूजे बेचने चल पड़ी क्योंकि गरीबी के कारण घर में खाने के लिए कुछ न बचा। अपने पोतों एवं बहू की भूख मिटाने के लिए खरबूज बेचने चल पड़ी।

Explanation Video

<https://youtu.be/fxJ7jzkLHcM>

-4-

6.बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

ज) लेखक फुटपाथ पर बैठी पुत्र शोक में रो रही बुढ़िया को देखा। उस बुढ़िया को घर में बैठे रोने का समय और अधिकार नहीं था। उसी समय लेखक को अपने पड़ोसी महिला की याद आयी। उस महिला का पुत्र मर गया तो अपने पुत्र की शोक में ढाई महीने तक वह पलंग पर पड़ी रही।

Explanation Video

<https://youtu.be/kaHwwRDKkRU>

(ख) प्रश्नों का उत्तर (50-60)

1.बाजार के लोग खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे ?

ज) बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली महिला के बारे में तरह-तरह से ताने दे रहे थे।

* कोई कह रहा था कि बुढ़िया कितनी बेहया है। अपने बेटे के मरने के दिन ही खरबूजे बेचने चली आई।

* दूसरा व्यक्ति कह रहा था कि जैसी नीयत होती है अल्लाह वैसे ही बरकत देता है।

* तीसरा व्यक्ति कान खुजलाते हुए कह रहा था कि “अरे इन लोगों का क्या है? ये कमीने रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, ईमान-धर्म सब रोटी का टुकड़ा ही है।”

Explanation Video

<https://youtu.be/ZqSrFrYo4C4>

-5-

2 पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला ?

ज) पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को पता चला कि – बुढ़िया का एक जवान पुत्र था – भगवाना। वह तेईस साल का था। उसके दो बच्चे भी हैं। वह शहर के पास डेढ़ बीघे जमीन पर सब्जियाँ उगाकर बेचता था। एक दिन सुबह-सबरे पके हुए खरबूजे को तोड़ रहा था। उसका पैर एक साँप पर पड़ गया। साँप ने उसे डँस लिया। इससे उनकी मौत हो गई। उसके मरने के बाद घर का गुजरा करनेवाला कोई नहीं था। अतः कोई उस बुढ़िया को उधार में पैसे भी न दे रहे हैं। मजबूरी में पुत्र की मौत के दूसरे दिन खरबूजा बेचने बाजार में बैठ गई।

Explanation Video

<https://youtu.be/xzpDwSzDSmg>

3. लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किये ?

ज) लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया ने वह सब उपाय किये जो उसकी सामर्थ्य में थे। साँप का विष उतारने के लिए झाड़-फेंक की। नाग देवता की पूजा की गई। घर का आटा और अनाज दान-दक्षिणा के रूप में दे दिया गया। फिर भी विष के प्रभाव के कारण बेटे का शरीर काला पड़ गया और उनकी मौत हो गई। बेटे की मृत्यु के बाद अत्येष्टी संस्कार में सब कुछ अर्पण कर दी।

Explanation Video

<https://youtu.be/DRIFcbgkHeQ>

-6-

4. लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा कैसे लगाया ?

ज) लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए अपने पड़ोस में रहने वाली एक संभ्रांत महिला को याद किया। उस महिला का पुत्र पिछले वर्ष मर गया था। अपने पुत्र की याद में मूर्छा हो जाती थी। हर पंद्रह मिनट बाद मूर्छित हो जाती थी। दो-दो डॉक्टर उस स्त्री के पास बैठे रहते थे। माथे पर बरफ की पट्टी रखी रहती थी। पुत्र शोक के अलावा कुछ न रहा था। लेखक उस महिला के दुःख की तुलना करते हुए उस अंदाजा हुआ कि इस गरीब बुढ़िया का दुःख भी वैसा ही है। लेकिन उसे शोक करने एवं गम मनाने का कोई अधिकार नहीं है।

Explanation Video

https://youtu.be/X95gtfS_VmE

5. इस पाठ का शीर्षक दुःख का अधिकार कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

ज) यशपाल जी के द्वारा कृत दुःख का अधिकार कहानी पढ़कर मुझे यही अनुभव हुआ कि संभ्रांत व्यक्तियों का दुःख ज्यादा भारी होता है। उन्हें दुःख व्यक्त करने का अधिकार है। उनके दुःख को देखकर आस-पास के लोग सहानुभूति दर्शाते हैं।

ठीक उसी प्रकार के दुःख जब गरीब को होता है तो लोग उसका उपहास करते हैं। घृणा भी करते हैं। तरह-तरह की अपशब्दों से उसे कोसते भी हैं। मानो गरीब को दुःख मनाने का कोई अधिकार ही नहीं है। लेखक के द्वारा दी गई यह शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

Explanation Video

<https://youtu.be/6eg-nE6l2Xg>

M.BALARAM